

कृष्णा सोबती के संस्मरणों में अभिव्यक्त समकालीन साहित्यिक परिदृश्य और व्यक्तित्व अंकन

अभिषेक सिंह

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

abhisheksingh7921@gmail.com

डॉ. मनोज कुमार यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

डी.ए. वी. डिग्री कॉलेज, लखनऊ

yadavmanojkumar031@gmail.com

सारांश

हिंदी साहित्य की वरिष्ठ कथाकार कृष्णा सोबती (1925-2019) मूलतः उपन्यासकार एवं कथाकार के रूप में विख्यात हैं, किंतु उनके संस्मरण-साहित्य ने हिंदी गद्य को एक नई शैलीगत दिशा दी है। उनकी बहुचर्चित कृति 'हम हशमत'—जो 'हशमत' नामक एक काल्पनिक पुरुष-व्यक्तित्व के नाम से लिखी गई चार भागों की शृंखला है—में लेखिका ने अपने समकालीन साहित्यकारों, यथा निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, नामवर सिंह, अज्ञेय, उपेंद्रनाथ अशक, सआदत हसन मंटो, राजेन्द्र यादव आदि के जीवन्त व्यक्तित्व-रेखाचित्र प्रस्तुत करते हुए बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के हिंदी साहित्यिक परिदृश्य का एक अमूल्य दस्तावेज़ रच दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में वेब पर उपलब्ध समालोचनात्मक सामग्री के गहन विश्लेषण के आधार पर यह अध्ययन किया गया है कि सोबती अपने संस्मरणों में समकालीन साहित्यिक जगत को किस दृष्टिकोण से देखती हैं और व्यक्तित्व-अंकन की कौन-सी विशिष्ट शिल्प-पद्धति अपनाती हैं। अध्ययन में पाया गया कि सोबती 'हशमत' के पुरुष-स्वर के माध्यम से रचना और विषय के बीच तटस्थता अर्जित करती हैं, सामान्य जन को भी नायक के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं, तथा देशज-बहुभाषिक शैली में शब्द-चित्रों का सजीव कोलाज़ रचती हैं। इसके साथ ही 'ज़िंदगीनामा' शीर्षक-विवाद जैसे प्रसंगों से समकालीन साहित्यिक जगत की प्रतिस्पर्धाएं और तनाव भी उजागर होते हैं। शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि सोबती का संस्मरण-साहित्य हिंदी की स्त्री-संस्मरण परंपरा—विशेषतः महादेवी वर्मा द्वारा स्थापित परंपरा—को आगे बढ़ाते हुए भी अपनी बेबाक, निर्भीक एवं आलोचनात्मक दृष्टि से एक विशिष्ट एवं स्वतंत्र मुकाम रचता है।

बीज शब्द: कृष्णा सोबती, हम हशमत, संस्मरण, व्यक्तित्व-अंकन, समकालीन साहित्यिक परिदृश्य, हशमत, विभाजन-चेतना, स्त्री-लेखन।

1. प्रस्तावना

हिंदी कथा-साहित्य के इतिहास में कृष्णा सोबती का नाम उन गिने-चुने रचनाकारों में लिया जाता है, जिन्होंने भाषा, शिल्प और विषय-वस्तु-तीनों स्तरों पर स्थापित मान्यताओं को चुनौती दी। 'मित्रो मरजानी', 'ज़िंदगीनामा', 'दिलोदानिश', 'ऐ लड़की' जैसी कृतियों ने उन्हें कथाकार के रूप में शीर्ष पर प्रतिष्ठित किया, किंतु उनकी संस्मरणात्मक रचनाओं-विशेषतः 'हम हशमत' शृंखला-का महत्व इससे किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। इन संस्मरणों में सोबती ने केवल अपने निजी जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के संपूर्ण हिंदी साहित्यिक परिदृश्य को अपने समकालीन रचनाकारों के जीवंत व्यक्तित्व-चित्रों के माध्यम से पाठकों के समक्ष रख दिया।

'हम हशमत' की विशिष्टता इस बात में निहित है कि सोबती ने इसे अपने नाम से नहीं, बल्कि 'हशमत' नामक एक काल्पनिक पुरुष-व्यक्तित्व के नाम से लिखा। यह युक्ति केवल एक साहित्यिक चमत्कार नहीं, बल्कि एक सुविचारित रचना-दृष्टि थी, जिसके माध्यम से लेखिका ने अपने समकालीनों का वर्णन करते समय आवश्यक तटस्थता और आलोचनात्मक दूरी अर्जित की। इन संस्मरणों में निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, कृष्ण बलदेव वैद, नागार्जुन, नामवर सिंह, अजेय, उपेंद्रनाथ अशक, सआदत हसन मंटो, राजेन्द्र यादव, अशोक वाजपेयी सरीखे दिग्गज साहित्यकारों के साथ-साथ सामान्य जन-जैसे बावर्ची मियाँ नसीरुद्दीन-के भी सजीव, बहुआयामी व्यक्तित्व-रेखाचित्र मिलते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र इसी दोहरे प्रश्न को केंद्र में रखकर आगे बढ़ता है-सोबती के संस्मरणों में समकालीन साहित्यिक परिदृश्य किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है, और उनकी व्यक्तित्व-अंकन की कला की विशिष्ट शिल्पगत विशेषताएं क्या हैं।

2. शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. कृष्णा सोबती के संस्मरण-साहित्य, विशेषतः 'हम हशमत' शृंखला, में अभिव्यक्त समकालीन हिंदी साहित्यिक परिदृश्य का विवेचन करना।
2. सोबती द्वारा अपनाई गई व्यक्तित्व-अंकन की शिल्पगत एवं भाषिक पद्धति का विश्लेषण करना।
3. 'हशमत' नामक पुरुष-छद्म के प्रयोग के पीछे निहित रचना-दृष्टि एवं उसकी सार्थकता की पड़ताल करना।
4. सोबती के संस्मरणों को हिंदी की संस्मरण-परंपरा, विशेषतः स्त्री-संस्मरणकारों की परंपरा, के संदर्भ में स्थान देना।

3. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें कृष्णा सोबती की कृतियों पर प्रकाशित शोध-पत्र, समालोचनात्मक आलेख, जाल-पत्रिकाओं में प्रकाशित समीक्षाएं तथा उनके संस्मरणों के मूल अंश सम्मिलित हैं। सामग्री का चयन करते समय विशेष रूप से उन स्रोतों को वरीयता दी गई है, जो सीधे तौर पर 'हम हशमत' तथा सोबती की अन्य संस्मरणात्मक कृतियों की विषय-वस्तु, शिल्प एवं भाषा-शैली से संबंधित हैं। एकत्रित सामग्री का विश्लेषण दो केंद्रीय अक्षों—समकालीन साहित्यिक परिदृश्य और व्यक्तित्व-अंकन की कला—के आधार पर किया गया है।

4. पूर्व शोध की समीक्षा

कृष्णा सोबती के कथा-साहित्य पर हिंदी में पर्याप्त शोध-कार्य उपलब्ध है, किंतु उनके संस्मरण-साहित्य पर केंद्रित स्वतंत्र अध्ययन तुलनात्मक रूप से सीमित हैं। सहित्यकुंज पर प्रकाशित एक विस्तृत आलेख में 'हम हशमत' के चारों भागों (1977, 1999, 2012 तथा 2019 में प्रकाशित) की विषय-वस्तु का विवरण देते हुए बताया गया है कि यह रचना 'संस्मरण, साक्षात्कार और व्यक्तित्व-रेखाचित्रों का कोलाज़' है, जिसमें 'बेतरतीब और बिखरी हुई कथन-शैली में अनायास पैदा हुई निडर अभिव्यक्ति' विद्यमान है।

नाज़िया परवीन (सेतु, 2024) ने अपने शोध-पत्र में 'हम हशमत' में वर्णित बावर्ची मियाँ नसीरुद्दीन के चरित्र का विस्तृत विश्लेषण करते हुए दिखाया है कि सोबती किस प्रकार सामान्य जन को भी साहित्यिक नायक के स्तर तक प्रतिष्ठित करती हैं। सुकृता पॉल कुमार (समालोचन) ने सोबती से हुई अपनी दीर्घ बातचीत के आधार पर उनकी रचना-प्रक्रिया, पांडुलिपि के प्रति पूर्णतावादी दृष्टिकोण तथा वर्जीनिया वुल्फ द्वारा प्रस्तावित 'उभयलिंगी लेखन' की अवधारणा से सोबती के जुड़ाव को रेखांकित किया है। मीना बुद्धिराजा (समालोचन, 2018) ने सोबती की पुस्तक 'मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में' की समीक्षा करते हुए इसे परंपरागत आलोचना-शैली से भिन्न, अनौपचारिक एवं आत्मीय पुनर्पाठ के रूप में चिह्नित किया है।

शुभनीत कौशिक (समालोचन, 'अदालत में साहित्यकार') ने कृष्णा सोबती और अमृता प्रीतम के बीच 'ज़िंदगीनामा' शीर्षक को लेकर हुए 27 वर्ष लंबे कानूनी विवाद का विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत करते हुए समकालीन हिंदी साहित्यिक जगत की आंतरिक प्रतिस्पर्धाओं पर प्रकाश डाला है। डॉ. तरुण (अपनी माटी, अंक-37, 2021) ने सोबती के कथा-साहित्य में विभाजन के संदर्भ का विश्लेषण करते हुए दिखाया है कि उनकी रचनाओं में विभाजन केवल राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि 'मानसिक ध्वंस' और नैतिक मूल्यों के पतन के रूप में चित्रित हुआ है। इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सोबती के संस्मरण-साहित्य में समकालीन साहित्यिक परिदृश्य और व्यक्तित्व-अंकन—दोनों ही दृष्टियों से

पर्याप्त शोध-संभावनाएं विद्यमान हैं, जिन्हें प्रस्तुत शोध पत्र समेकित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

5. हिंदी संस्मरण-विधा की परंपरा और कृष्णा सोबती

5.1 संस्मरण विधा: स्वरूप और विशेषताएं

संस्मरण हिंदी गद्य-साहित्य की वह विधा है, जिसमें लेखक अपनी स्मृतियों और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर किसी व्यक्ति, घटना, स्थान अथवा विशेष प्रसंग का आत्मीय एवं प्रभावपूर्ण चित्रण करता है। इसमें केवल तथ्यात्मक विवरण नहीं होता, बल्कि लेखक की अनुभूति, संवेदना और व्यक्तिगत दृष्टिकोण भी उतनी ही प्रमुखता से अभिव्यक्त होते हैं। आत्मकथा से इसका मूल अंतर यह है कि आत्मकथा में लेखक अपने संपूर्ण जीवन को जन्म से वर्तमान तक क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि संस्मरण किसी विशिष्ट व्यक्ति, घटना अथवा प्रसंग तक सीमित एवं चयनात्मक होता है। स्मृति-आधारितता, आत्मपरकता, भावात्मकता, यथार्थपरकता, व्यक्तित्व के बहुआयामी पक्षों का उभार तथा सहज-आत्मीय भाषा इस विधा की प्रमुख विशेषताएं मानी जाती हैं।

हिंदी में महादेवी वर्मा ('अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएं', 'पथ के साथी'), रामवृक्ष बेनीपुरी ('माटी की मूरतें') तथा कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ('भूले हुए चेहरे') जैसे रचनाकारों ने इस विधा को समृद्ध किया है। विशेष रूप से महादेवी वर्मा का 'पथ के साथी', जिसमें उन्होंने अपने साहित्यिक समकालीनों के व्यक्तित्व-चित्र अंकित किए, इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि यह उसी परंपरा की पूर्ववर्ती कड़ी मानी जा सकती है, जिसे आगे चलकर कृष्णा सोबती ने 'हम हशमत' के माध्यम से एक नए, अधिक बेबाक एवं आलोचनात्मक स्वर में विस्तार दिया।

5.2 सोबती और स्त्री-संस्मरण-परंपरा में उनका विशिष्ट स्थान

महादेवी वर्मा के संस्मरण जहां करुणा, ममत्व एवं सूक्ष्म संवेदनशीलता की भावभूमि पर रचे गए हैं, वहीं कृष्णा सोबती के संस्मरण एक भिन्न मिज़ाज़ लेकर उपस्थित होते हैं—वे बेबाक हैं, कहीं-कहीं व्यंग्यपूर्ण हैं, और अपने समकालीनों की प्रशंसा के साथ-साथ उनकी आलोचना करने से भी नहीं हिचकते। यह भिन्नता सोबती के उस साहसिक व्यक्तित्व की परिचायक है, जिसने हिंदी की स्त्री-लेखन परंपरा में एक नई, अधिक मुखर एवं निर्भीक धारा को जन्म दिया।

6. कृष्णा सोबती के संस्मरण-साहित्य का परिचय

6.1 'हम हशमत': हशमत नामक द्वितीय व्यक्तित्व की सृष्टि

कृष्णा सोबती ने अपने संस्मरणों के लिए स्वयं को 'हशमत' नामक एक अन्य पात्र के रूप में गढ़ लिया। यह केवल एक उपनाम नहीं था, बल्कि—जैसा कि सोबती स्वयं कहती थीं—'अपने आप में एक संपूर्ण व्यक्तित्व' था। उनके अनुसार, जब वे इस रूप में लिखती थीं तो उनकी भाषा, शब्द-चयन और यहां तक कि हस्तलेख भी बदल जाता था। यह युक्ति विषय से आवश्यक तटस्थता और आलोचनात्मक दूरी बनाए रखने के लिए सायास अपनाई गई थी। 'हम हशमत' चार भागों में क्रमशः 1977, 1999, 2012 तथा 2019 में प्रकाशित हुई—अर्थात् इसका रचना-काल लगभग साढ़े चार दशकों तक विस्तृत है, जिससे यह हिंदी साहित्य के एक बहुत बड़े कालखंड का साक्षी बन जाती है।

6.2 अन्य संस्मरणात्मक एवं आत्मकथात्मक कृतियां

'हम हशमत' के अतिरिक्त कृष्णा सोबती की 'मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में' (2017) कवि-आलोचक गजानन माधव मुक्तिबोध पर केंद्रित एक विशिष्ट कृति है, जिसमें सोबती ने परंपरागत आलोचनात्मक निबंध की शैली को त्यागकर एक आत्मीय, अनौपचारिक पुनर्पाठ प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' (2017) में उन्होंने अपने बचपन, विभाजन के अनुभव तथा भारत आगमन की यात्रा को आत्मकथात्मक शैली में दर्ज किया है, जो उनके संस्मरण-लेखन के व्यक्तिगत एवं ऐतिहासिक—दोनों आयामों को उजागर करता है।

7. हम हशमत में अभिव्यक्त समकालीन साहित्यिक परिदृश्य

7.1 प्रथम भाग: प्रगतिशील एवं नई कहानी पीढ़ी के हस्ताक्षर

'हम हशमत' के प्रथम भाग में निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, कृष्ण बलदेव वैद तथा नागार्जुन जैसे रचनाकारों के व्यक्तित्व-रेखाचित्र सम्मिलित हैं। इन रेखाचित्रों के माध्यम से सोबती ने नई कहानी आंदोलन तथा प्रगतिशील लेखन की उस पीढ़ी की वैचारिक बहसों, पारस्परिक संबंधों तथा रचनात्मक चिंताओं को जीवंत कर दिया है, जो स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य की दिशा तय कर रही थी।

7.2 द्वितीय भाग: आलोचना-जगत और नई पीढ़ी का समागम

द्वितीय भाग में नामवर सिंह, अज्ञेय, उपेंद्रनाथ अशक, सआदत हसन मंटो तथा बलवंत सिंह जैसे वरिष्ठ हस्ताक्षरों के साथ-साथ अशोक वाजपेयी, गोविंद मिश्र तथा नासिरा शर्मा जैसे तत्कालीन युवा रचनाकारों के व्यक्तित्व-चित्र मिलते हैं। यह भाग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें आलोचना-जगत के शीर्षस्थ हस्ताक्षर (नामवर सिंह) तथा प्रयोगवाद के प्रवर्तक (अज्ञेय) एक साथ उपस्थित होकर उस दौर के वैचारिक वैविध्य को प्रतिबिंबित करते हैं, जिसमें परंपरा और प्रयोग, वरिष्ठता और नवोन्मेष—दोनों साथ-साथ गतिशील थे।

7.3 तृतीय भाग: वैचारिक टकराव और आलोचनात्मक तेवर

तृतीय भाग में सत्येन कुमार, जयदेव, निर्मल वर्मा, अशोक वाजपेयी, रवीन्द्र कालिया तथा विष्णु खरे जैसे नामों के साथ-साथ विभूतिनारायण राय पर लिखी गई उनकी तीखी आलोचना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह दर्शाता है कि सोबती के संस्मरण मात्र प्रशस्ति-लेखन नहीं थे, बल्कि उनमें समकालीन साहित्यिक-सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों पर सतर्क, कहीं-कहीं तीखी आलोचनात्मक दृष्टि भी सन्निहित थी। यह निर्भीकता ही सोबती के संस्मरण-लेखन को परंपरागत, प्रशस्तिपरक संस्मरण-लेखन से अलग करती है और उसे एक स्वतंत्र वैचारिक हस्तक्षेप का दर्जा देती है।

7.4 चतुर्थ भाग: समकालीन सामाजिक-राजनीतिक विमर्श

चौथे भाग में राजेन्द्र यादव तथा असद जैदी पर विस्तृत आलेखों के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक विवादों पर सोबती की सीधी प्रतिक्रियाएं दर्ज हैं। इस भाग से स्पष्ट होता है कि सोबती के लिए संस्मरण-लेखन केवल अतीत का पुनर्स्मरण नहीं, बल्कि वर्तमान के प्रति सजग, सक्रिय हस्तक्षेप का माध्यम भी था। सोबती का यह कथन कि 'लोक की प्रतिष्ठा में ही लेखक का गणतंत्र है', उनकी लोकतांत्रिक चेतना, सांप्रदायिकता-विरोध तथा नागरिक अधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

7.5 'ज़िंदगीनामा' शीर्षक-विवाद: साहित्यिक जगत की प्रतिस्पर्धा का एक अध्याय

समकालीन साहित्यिक परिदृश्य को समझने के लिए कृष्णा सोबती और अमृता प्रीतम के बीच हुआ 'ज़िंदगीनामा' शीर्षक-विवाद भी अत्यंत सूचक है। सन् 1979 में सोबती की कृति 'ज़िंदगीनामा' प्रकाशित हुई थी (जिसके लिए उन्हें 1980 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ)। सन् 1983 में जब अमृता प्रीतम की पुस्तक 'हरदत्त का ज़िंदगीनामा' का विज्ञापन प्रकाशित हुआ, तो सोबती ने इसे अपने शीर्षक के अनधिकृत प्रयोग के रूप में देखते हुए न्यायालय की शरण ली। सोबती पक्ष का तर्क था कि 'ज़िंदगीनामा' शब्द उनकी मौलिक सृष्टि है, जबकि प्रतिपक्ष ने यह प्रमाणित किया कि यह शब्द सत्रहवीं शताब्दी से ही प्रचलन में रहा है। यह मुकदमा सत्ताईस वर्षों तक चला और अंततः सन् 2011 में न्यायालय ने सोबती के पक्ष को अस्वीकार करते हुए यह निर्णय दिया कि उक्त शब्द पर उनका एकाधिकार सिद्ध नहीं होता। यह प्रसंग—चाहे वह सोबती के अपने संस्मरणों में सीधे वर्णित न भी हो—उस समकालीन साहित्यिक परिवेश की एक बानगी अवश्य प्रस्तुत करता है, जिसमें सोबती स्वयं जी रही थीं: एक ऐसा परिवेश जहां रचनात्मक स्वामित्व, प्रतिष्ठा और सृजनात्मक अस्मिता को लेकर वरिष्ठ साहित्यकारों के बीच गहरे तनाव भी उपस्थित थे।

8. व्यक्तित्व-अंकन की कला: सोबती की शिल्प-पद्धति

8.1 मियाँ नसीरुद्दीन: सामान्य जन को नायक बनाने की तकनीक

'हम हशमत' में वर्णित बावर्ची मियाँ नसीरुद्दीन का चरित्र-चित्रण सोबती की व्यक्तित्व-अंकन कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मियाँ अपने पाक-कला के पेशे को लेकर गहरा खानदानी गर्व रखते हैं—वे छप्पन प्रकार की रोटियां बनाने में निपुण माने जाते हैं, और यह कौशल उन्हें पीढ़ियों से विरासत में मिला है। सोबती उनका चित्रण करते हुए लिखती हैं—'मौसमों की मार से पका चेहरा, आंखों में काइयां भोलापन और पेशानी पर मंजे हुए कारीगर के तेवर।' शिक्षा-पद्धति पर मियाँ का यह कथन भी उल्लेखनीय है—'कहने का मतलब साहिब यह कि तालीम की तालीम भी बड़ी चीज़ होती है।' बदलते समय पर व्यंग्य करते हुए वे कहते हैं—'उतर गए वे जमाने। और गए वे कद्रदान जो पकाने-खाने की कद्र करना जानते थे!'

इस चरित्र-चित्रण से स्पष्ट होता है कि सोबती की तकनीक साधारण, अनाम-से व्यक्तियों को भी साहित्यिक नायक के स्तर तक प्रतिष्ठित करने की है। वे शब्द-चित्रों के एक जीवंत कोलाज़ के माध्यम से परंपरा, कारीगरी और सामाजिक-सांस्कृतिक विघटन जैसे गहरे विषयों को एक सामान्य व्यक्ति के जीवन-अनुभव के माध्यम से मूर्त रूप देती हैं। यही कारण है कि 'हम हशमत' को 'बोलते शब्द-चित्रों की एक घूमती हुई रील' कहा गया है, जिसमें 'हर चित्र घटना है और हर चेहरा नायक'।

8.2 मुक्तिबोध का पुनर्पाठ: आलोचना से परे आत्मीय व्यक्तित्व-चित्रण

'मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में' में सोबती की शिल्प-पद्धति और भी स्पष्ट होकर सामने आती है। इस पुस्तक में सोबती ने मुक्तिबोध को एक आत्मसंघर्ष से जूझते, अपनी अंतर्बाह्य द्वंद्वता से कभी समझौता न करने वाले कवि के रूप में प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक परंपरागत आलोचनात्मक निबंध की शैली से सर्वथा भिन्न है—इसमें न तो कोई औपचारिक भूमिका है, न अनुक्रमणिका, बल्कि मुक्तिबोध की काव्य-पंक्तियों पर सीधी, गहन एवं आत्मीय टिप्पणियां हैं। यह दर्शाता है कि सोबती व्यक्तित्व-अंकन को केवल जीवनी-लेखन अथवा आलोचना तक सीमित नहीं रखतीं, बल्कि उसे एक सृजनात्मक, संवादमूलक प्रक्रिया के रूप में बरतती हैं, जिसमें लेखिका और विषय-व्यक्ति के बीच एक गहरा आत्मीय संबंध स्थापित होता है।

8.3 भाषा-शैली: देशज मुहावरा, बहुभाषिकता और शब्द-चित्रों का कोलाज़

सोबती की भाषा-शैली उनके व्यक्तित्व-अंकन को विशिष्ट बनाने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। उनकी भाषा में उर्दू, पंजाबी, संस्कृत तथा मुहावरेदार देशज हिंदी का सुंदर सम्मिश्रण मिलता है, जो यथार्थवादी एवं प्रवाहमयी अभिव्यक्ति को जन्म देता है। परिवेश और पात्र के अनुरूप वे कभी व्यंग्यात्मक तो कभी विवरणात्मक शैली अपनाती हैं। पंजाबी तथा सीमावर्ती बोलियों का प्रयोग उनकी रचनाओं में इतना सहज और स्वाभाविक है कि वह किसी बनावटी अलंकरण के रूप में नहीं, बल्कि

पात्रों के जीवन-यथार्थ के अभिन्न अंग के रूप में उभरता है। यही 'देशज भाषा-शैली' सोबती के संस्मरणों को एक विशिष्ट सांस्कृतिक बहुलता और जीवंतता प्रदान करती है।

8.4 हशमत का पुरुष-स्वर: तटस्थता, दूरी और उभयलिंगी लेखन-दृष्टि

सुकृता पॉल कुमार के विश्लेषण के अनुसार, सोबती अंग्रेज़ी की प्रसिद्ध लेखिका वर्जीनिया वुल्फ द्वारा प्रतिपादित 'उभयलिंगी लेखन' (अर्थात् लेखक की चेतना में स्त्री और पुरुष-दोनों दृष्टियों के सहअस्तित्व) की अनिवार्यता में गहरा विश्वास रखती थीं। 'हम हशमत' श्रृंखला में उन्होंने जान-बूझकर पुरुष-स्वर अपनाया, ताकि वे विशुद्ध लैंगिक पहचान के दबाव से मुक्त होकर अपने समकालीनों का निष्पक्ष मूल्यांकन कर सकें। यह भी उल्लेखनीय है कि सोबती अपने प्रत्येक उपन्यास के कम-से-कम तीन प्रारूप (ड्राफ्ट) तैयार करती थीं तथा रात्रि में एकांत में बैठकर अपनी आंतरिक आवाज़ को सुनने की प्रक्रिया में विश्वास रखती थीं। उनका यह पूर्णतावादी दृष्टिकोण तथा विभाजन जैसी त्रासद स्मृतियों को कलात्मक दूरी के साथ बरतने की क्षमता उनके संस्मरण-लेखन की गहराई का एक प्रमुख स्रोत है।

9. विभाजन-चेतना और स्त्री-दृष्टि: संस्मरणों की वैचारिक भूमि

कृष्णा सोबती का जन्म सन् 1925 में गुजरात (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था तथा विभाजन के पश्चात् उन्हें भारत आना पड़ा। यह व्यक्तिगत अनुभव उनके संपूर्ण साहित्य-कथा-साहित्य से लेकर संस्मरण-साहित्य तक-की एक अंतर्निहित वैचारिक भूमि बन गया। डॉ. तरुण के अध्ययन के अनुसार, सोबती के लिए भारत-विभाजन केवल एक भू-राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि यह एक 'मानसिक ध्वंस' था, जिसने सदियों से साथ रह रहे लोगों को एक-दूसरे के लिए अपरिचित बना दिया। उनकी आत्मकथात्मक कृति 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' में यह विभाजन-चेतना और भी सीधे रूप में अभिव्यक्त हुई है, जहां लेखिका अपने बचपन के गुजरात और वयस्क जीवन के भारत आगमन को एक साथ याद करती हैं।

इसी वैचारिक भूमि पर सोबती की स्त्री-दृष्टि भी विकसित होती है, जो उनके संस्मरणों में साहित्यिक जगत की स्त्री-विरोधी रूढ़ियों के प्रति सजग आलोचनात्मक चेतना के रूप में सामने आती है। सोबती का सारा संस्मरण-लेखन-चाहे वह हशमत के पुरुष-स्वर में हो अथवा प्रत्यक्ष आत्मकथात्मक स्वर में-राष्ट्रीयता, लोकतंत्र, नागरिक अधिकार, सांप्रदायिकता-विरोध तथा सांस्कृतिक बहुलता जैसे मूल्यों की निरंतर पुष्टि करता चलता है।

10. विवेचना: संस्मरण, आलोचना और आत्मकथा के बीच सोबती का विशिष्ट स्थान

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती का संस्मरण-साहित्य पारंपरिक विधागत सीमाओं को बार-बार लांघता है। 'हम हशमत' न तो विशुद्ध संस्मरण है, न विशुद्ध साक्षात्कार-संकलन,

न आलोचना-बल्कि इन सभी विधाओं के तत्वों का एक अद्वितीय सम्मिश्रण है। इसी प्रकार 'मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में' आलोचना और संस्मरण की सीमा-रेखा पर खड़ी कृति है, तो 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' संस्मरण और आत्मकथा के बीच की कड़ी प्रतीत होती है। यह विधागत तरलता स्वयं में सोबती की एक बड़ी उपलब्धि है—वे परंपरागत सांचों में बंधने के बजाय अपनी अभिव्यक्ति की आवश्यकता के अनुरूप नए शिल्प गढ़ती हैं।

यही कारण है कि सोबती का संस्मरण-साहित्य महादेवी वर्मा द्वारा स्थापित स्त्री-संस्मरण-परंपरा को आगे तो बढ़ाता है, किंतु उसकी करुणा-प्रधान, संयत भावभूमि से आगे जाकर एक अधिक बेबाक, आलोचनात्मक और कहीं-कहीं विवादास्पद स्वर ग्रहण कर लेता है। यह स्वर हिंदी की स्त्री-लेखन परंपरा में एक नए मुकाम की स्थापना करता है, जहां लेखिका न केवल संवेदना की, बल्कि निर्भीक आलोचनात्मक निर्णय की भी अधिकारी बनकर उभरती है।

11. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती के संस्मरण, विशेषतः 'हम हशमत' शृंखला, हिंदी साहित्य के लिए दोहरे महत्व की कृतियां हैं। एक ओर वे बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के समकालीन साहित्यिक परिदृश्य का एक जीवंत, प्रामाणिक तथा कहीं-कहीं आलोचनात्मक दस्तावेज़ प्रस्तुत करती हैं, जिसमें निर्मल वर्मा से लेकर राजेन्द्र यादव तक अनेक शीर्षस्थ साहित्यकारों के व्यक्तित्व सजीव हो उठते हैं। दूसरी ओर, वे व्यक्तित्व-अंकन की एक ऐसी विशिष्ट कला का प्रदर्शन करती हैं, जिसमें 'हशमत' के पुरुष-स्वर के माध्यम से अर्जित तटस्थता, देशज-बहुभाषिक शैली का सहज प्रयोग, तथा सामान्य जन को भी नायक के रूप में प्रतिष्ठित करने की दृष्टि—सभी एक साथ मिलकर एक अद्वितीय साहित्यिक शिल्प का निर्माण करते हैं।

अंततः, कृष्णा सोबती के संस्मरण-साहित्य का यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि सोबती न केवल एक श्रेष्ठ कथाकार थीं, बल्कि हिंदी की संस्मरण-विधा को एक नई निर्भीकता, वैचारिक गहराई और शिल्पगत नवीनता प्रदान करने वाली अग्रणी रचनाकार भी थीं। उनके संस्मरण आने वाली पीढ़ियों के लिए न केवल एक साहित्यिक विरासत हैं, बल्कि बीसवीं शताब्दी के हिंदी साहित्यिक समाज को समझने की एक अनिवार्य कुंजी भी हैं।

संदर्भ सूची

1. हिंदी विकिपीडिया (सम्पादित)। "कृष्णा सोबती"। जालस्थल: https://hi.wikipedia.org/wiki/कृष्णा_सोबती
2. साहित्यकुंज (जाल-प्रकाशित)। "कृष्णा सोबती हशमत के जामे में"। जालस्थल: <https://m.sahityakunj.net/entries/view/krishna-sobati-hashmat-ke-jaame-mein>

3. परवीन, नाज़िया (2024)। “हम हशमत में मियाँ नसीरुद्दीन का चरित्र चित्रण”। सेतु (द्वैभाषिक मासिक पत्रिका), मार्च अंक। जालस्थल:
<https://www.setumag.com/2024/03/Hum-Hashmat-Krishna-Sobti.html>
4. कुमार, सुकृता पॉल। “कृष्णा सोबती का लेखकीय व्यक्तित्व”। समालोचन। जालस्थल:
<https://samalochan.com/krishna-sobti-3/>
5. बुद्धिराजा, मीना (2018)। “परख: मुक्तिबोध: एक व्यक्तित्व सही की तलाश में (लेखिका कृष्णा सोबती)”। समालोचन जाल-पत्रिका, जून अंक। जालस्थल:
https://samalochan.blogspot.com/2018/06/blog-post_15.html
6. कौशिक, शुभनीत। “अदालत में साहित्यकार”। समालोचन। जालस्थल:
<https://samalochan.com/literature-in-law/>
7. तरुण, डॉ. (2021)। “विभाजन का संदर्भ और कृष्णा सोबती का कथा साहित्य”। अपनी माटी, अंक-37, जुलाई-सितंबर। जालस्थल: https://www.apnimaati.com/2021/11/blog-post_3.html
8. टेस्टबुक (जाल-प्रकाशित)। “संस्मरण: परिभाषा, विशेषताएं एवं प्रमुख संस्मरणकार”। जालस्थल: <https://testbook.com/ugc-net-hindi/sansmaran>
9. नॉलेजस्थली (जाल-प्रकाशित)। “संस्मरण: अर्थ, परिभाषा, विकास एवं विशेषताएं”। जालस्थल:
<https://knowledgesthali.com/संस्मरण/>